दी नेहु जर्नल, वर्ष : ५, संख्या : १ व २, २००७

कॉकबरक लोककथा का स्वरूप

डॉ० मिलन रानी जमातिया

पूर्वोत्तर भारत के पश्चिमी क्षेत्र में स्थित त्रिपुरा प्रदेश में विभिन्न जनजातियाँ प्राचीन काल से बसी हुई हैं । विभिन्न वेश-भूषा, भाषा व बोलियाँ बोलने वाले इस जनजातीय प्रदेश में त्रिपुरी, रियांग, जमातिया, हालाम, गारो, लुसाई, मणीपुरी, चाकमा, खासी आदि जनजातियाँ निवास करती हैं । जनसंख्या की दृष्टि से बहुलता के कारण सबसे बड़ी जनजाति के रूप में स्वीकृत 'बरक' जनजाति (जिसमें रियांग, त्रिपुरी, जमातिया जनजातियाँ आती हैं । त्रिपुरा के सभी प्रमुख जनपदों -- उदयपुर, अमरपुर, सदर, जम्पुई, कोइलासशहर, कल्याणपुर, साब्रूम आदि में निवास करती हैं ।

यहाँ सम्पर्क भाषा के रूप में बंगला के बाद कॉकबरक अर्थात 'बरक' जनजाति की बोली दूसरी प्रमुख भाषा है । प्रो. सुनीति कुमार चटर्जी इसे ही त्रिपुरा राज्य की प्रमुख बोली मानते हैं । उनके अनुसार यह भाषा असमी-बर्मा भाषा उपकुल की है, जो बर्मी-तिब्बती कुल की है । कॉकबरक भाषा के महान भाषाविद् श्री कुमुदकुन्दु चौधुरी के अनुसार कॉकबरक भाषा तिब्बत-बर्मन भाषा उपकुल की है, जो साइनों-तिनेतन कुल की भाषा है । सीधे तौर पर कहा जाए तो कॉकबरक भाषा 'बोडो' कुल की भाषा है ।

जहाँ तक इनके साहित्य का प्रश्न हैं । इसका अधिकांशतः मौखिक परंपरा के रूप में ही हस्तांतरित होता रहा है । लिखित साहित्य का आरम्भ हाल ही में हुआ है, किन्तु त्रिपुरा प्रदेश की जनजातियों का अपना एक इतिहास है, अपनी एक संस्कृति और अपना एक अस्तित्व है । इसका भाषा का लोकसाहित्य अत्यंत धनी है, इसका मुख्य कारण है, इन जनजातियों में प्रचलित लोककथाएँ व कहावतें । ये लोककथाएँ यहाँ के निवासियों के लिए एक महत्त्वपूर्ण साधन है । अवकाश के समय अलाव के पास बैठ कर बड़े-बूढ़ों से बच्चे लोककथाएँ सुनकर मनोरंजन करते हैं और इनके माध्यम से उनको शिक्षा भी प्राप्त होती है । इन लोककथाओं के माध्यम से बरक जनजातियों के सुख-दुःख, सामाजिक संगठन की रूप-रेखा, धार्मिक विश्वास, उनका इतिहास आदि का ज्ञान प्राप्त होता है । 'बरक' जनजातियों का कोई प्रकाशित साहित्य नहीं है । अतः लोककथाएँ ही उनके लिए वेद, पुराण उपनिषद और गीता है कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी क्योंकि इनका सारा जीवन दर्शन लोककथाओं पर आधारित हैं । बरक जनजातियों को चमत्कारपूर्ण अलौकिक लोककथाएँ अधिक प्रिय हैं । वृक्ष और उनमें लगने वाले फल-फूल, उन पर निवास करने वाले पशु-पक्षी सब इनके साथी हैं, जो सुख-दुःख में इनका साथ देते है । लोककथाओं में कॉकबरक भाषियों के जीवन का अंतरंग स्वरूप दिखाई देता है । उनका दैनिक जीवन, उनके व्यवसाय, उनकी आर्थिक स्थिति, उनके विश्वास तथा परंपराएँ सब कुछ प्रतिबिम्बित होता है । जीवन का ऐसा कोई भी पहलू नहीं जो कॉकबरक लोककथाओं में नहीं आया हो । मनुष्य के सुपरिचित पशु-पक्षियों से संबन्धित कथाएँ जिनमें सर्प और अजगर तक की कथाएँ सम्मिलित हैं।

पुनर्जीवित होना, आकाश में विलुप्त हो जाना जैसे चमत्कार पूर्ण कथाएँ भी कॉकबरकक लोककथाओं में उपलब्ध हैं ।

डॉ. श्रीचन्द्र जैन ने 'लोककथा विज्ञान' में आदिवासी कथाओं को निम्नांकित बायालिस भागों में विभाजित किया है --

१. सृष्टि की कथाएँ
२. पशु-पक्षियों की कथाएँ
३. भूत-प्रेतों की कथाएँ
४. अन्य विश्वासों की कथाएँ
५. खाद्य पदार्थों की कथाएँ
६. चोरों की कथाएँ
७. साहूकारों की कथाएँ
८. युद्धों की कथाएँ
९. राक्षसो की कथाएँ
१०. राजा-रानियों की कथाएँ
११. ऐतिहासिक की कथाएँ
१२. हास्य कथाएँ
१३. प्रतिशोध की कथाएँ
१४. विद्रोह की कथाएँ
१५. मूर्खों की कथाएँ
१६. बालक-बालिकाओं की कथाएँ
१७. भविष्यवाणी से सम्बद्ध कथाएँ
१८. साधु-सन्तों की कथाएँ
१९. नारी कथाएँ
२०. देवी-देवता की कथाएँ
२१. वृक्ष एवं पुष्पों की कथाएँ
२२. जादू-टोना की कथाएँ
२३. त्योहारों की कथाएँ
२४. शिकार की कथाएँ
२५. ठगों की कथाएँ
२६. साँपों की कथाएँ
२७. जड़ी-बूटियों की कथाएँ
२८. परियों की कथाएँ
२९. आभूषणों की कथाएँ
३०. प्रेम कथाएँ
३१. मनोरंजन कथाएँ
३२. विवाह की कथाएँ
३३. अत्याचारों की कथाएँ
३४. धूर्तों की कथाएँ
३५. यात्राओं की कथाएँ
३६. स्वप्नों की कथाएँ
३७. शाप-वरदान की कथाएँ
३८. दास-दासियों की कथाएँ
३९. न्याय संबंधी कथाएँ
४०. कहावतों की कथाएँ
४१. बुद्धि-परीक्षा विषयक कथाएँ
४२. बलिदान कथाएँ
४३. विविध की कथाएँ

उपर्युक्त विभाजन के उपरान्त डॉ. जैन ने लिखा है -- ''इन कथाओं के कई उद्देश्य हैं । मनोरंजन के साथ-साथ इन कहानियों ने जातीय एवं सामाजिक रीति-रिवाजों को जीवित रखा है तथा धार्मिक विश्वासों को अधिक प्रभावशाली बनाया है । देवी-देवता विषयक धारणाओं को बलवती बनाने में इन कथाओं का योगदान सदा स्मरणीय रहेगा ।''

कृष्ण दास ने अपनी पुस्तक -- ''आदिबासी त्रिपुरार लोककथा लोकगिति प्रवाद–प्रवचन ओ धाँधा '' में उन्होंने डॉ. आशुतोष भट्टाचार्य के कॉकबरक लोककथाओं के वर्गीकरण के आधार पर त्रिपुरा के आदिवासियों की लोककथा व लोकगाथा को निम्नलिखित बारह भागों में विभाजित किया --

१. अलौकिक जन्म कथाएँ
७. चतुरता की कथाएँ

२.	इन्द्रजाल विषयक कथाएँ	८.	छोटी पत्नी की कथाएँ
३.	भूत-प्रेत की कथाएँ	९.	भाई-भगीनी की कथाएँ
४.	देव कथाएँ	१०.	दोस्तों की कथाएँ
५.	निष्ठुरता की कथाएँ	११.	लोभी की कथाएँ
६.	मूर्खों की कथाएँ	१२.	विविध कथाएँ

कॉकबरक लोककथाओं के अध्ययन व विवेचन के पश्चात मैंने कॉकबरक की लोककथाओं को निम्नांकित सात विभागों में वर्गीकृत किया है --

१. **धार्मिक कथाएँ :** धार्मिक कथाओं को दो मुख्य भागों में बाँटा जा सकता है --

'क' त्योहार तथा अनुष्ठान संबंधी लोक कथाएँ -- जिसमें कॉकबरक भाषियों के बुईसू, सेना, हांगराई आदि कथाएँ आती है ।

'ख' देवी-देवता संबंधी कथाएँ -- इसके अन्तर्गत 'गरिया', चौदह देवता, बुरासा, तुई माँ, शनि देवता और चाँद-सूर्य की कथाएँ आती है ।

२. **ऐतिहासिक कथाएँ :** इनमें ऐतिहासिक पुरुषों से संबंधित कथाएँ आती हैं, यथा -- श्रीबक्स राजा, राजागोविन्द मानिक्य, बीर बिक्रम किशोर मानिक्य, चाँद सौदागर आदि।

३. **अलौकिक कथाएँ :** इस प्रकार की कथाओं का संबंध अतिमानवीय शक्तियों से हैं, जिन्होंने लोकमानस के जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया है । इन कथाओं में दानवों, परियों तथा सिद्ध पुरुषों के चमत्कार देखने को मिलते हैं ।

४. **सामाजिक कथाएँ :** इन कहानियों के अन्तर्गत समाज से संबंधित भिन्न-भिन्न प्रकार की कहानियाँ आती है, यथा -- स्थानीय कथाएँ, बालकों से संबंधित कथाएँ, जातीय कथाएँ तथा सामान्य या फुटकर कथाएँ ।

५. **नीति-कथाएँ :** नीतिकथाओं के अंतर्गत समाज में प्रचलित नीतिवाक्य तथा कहावतों से संबंधित कथाएँ हैं । यह कहावतें या नीतिवाक्य लोककथाओं के चरम वाक्य होते हैं । उल्लेख्य है कि कॉकबरक लोककथाकार लोककथाओं के अंत में एक नीति या सूक्ति वाक्य कहकर कथा का अंत करते हैं, यथा -- ''दुखू थांग सुखू फाई'' अर्थात दुःख की विदाई हो और सुख का आगमन हो । यह वाक्य कॉकबरक लोककथाओं का आदर्श व मूल आधार है ।

६. **हास्य-कथाएँ :** ये कथाएँ मूर्खों की तथा अन्य हास्यप्रद कथाओं से संबंधित हैं, जिनसे समाज का मनोरंजन होता है, यथा याम्रकस और रांदिजोकमा आदि कथाएँ ।

७. **पशु-पक्षी संबंधी कथाएँ :** पशु-पक्षी से संबंधित कथाओं में पशु-पक्षी मनुष्य की बोली बोलते हैं । यह मनुष्य से भिन्न होते हुए भी उसके अभिन्न अंग हैं, यथा माचुंग कुफूर, तॉकपपि, तॉकलिंग, तयुंग आदि कथाएँ ।

उपरिलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत कॉकबरक की समस्त लोककथाओं को रखा जा सकता है ।

कॉकबरक लोक कथाओं का परिचय : उत्तर भारत और दक्षिण भारत की लोककथाओं के समान कॉकबरक की लोककथाओं में इतनी विविधता उपलब्ध नहीं है परन्तु उपलब्ध कथाएँ

कॉकबरक भाषियों के जीवन मूल्य, सांस्कृतिक, धार्मिक मूल्य, सामाजिक मूल्यों आदि का मूलभूत आधार है और कॉकबरक भाषियों के जीवन चरित्र उद्‌घाटित करती है । कॉकबरक की लोककथाओं को निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत देख सकते हैं --

१. **जनजातीय जीवन** आदिम धर्म है । जिसको अंग्रेजी में एनेमिज्म कहा जाता है, जिसमें हर वस्तु प्राणवान माना जाता है । यही करण हे कि कॉकबरक की लोककथाओं का कोई पौराणिक आधार नहीं है किन्तु स्थानीय देवी-देवता और प्रकृति से संबंधित अनेक कथाएँ कॉकबरक में आदिम काल से प्रचलित है । जिनके प्रति कॉकबरक भाषी अटूट श्रद्धा, आस्था और विश्वास रखते हैं । उदारहण के लिए 'चौदह देवता' नामाक लोककथा प्रस्तुत है --

त्रिपुरा प्रदेश की रानी हीरावती एक दिन नदी पर नहाने गई वहाँ पर उसको कोई बार-बार पुकार कर कह रहा था कि हमारी सहायता कीजिए । रानी हीरावती यह समझ नहीं पाई कि आवाज कहाँ से आ रही है । जब उसने पूछा तो उत्तर मिला कि हम पेड़ पर बैठे हुए चौदह देवता हैं जो एक भैंसे के डर से नीचे नहीं आ सकते । भैंसा पेड़ के नीचे बैठा है, आज सात दिन हो गये, हम भूखे-प्यासे हैं । आप हमारी सहायता कीजिए । आप भाग्यवती सती-साध्वी रानी हैं जो हमें बचा सकती हैं । रानी को आश्चर्य हुआ कि ये चौदह देवता मिलकर भी भैसा का कुछ नहीं कर सके तो मैं क्या कर सकती हूँ ? देवताओं ने रानी को कहा कि आप इस भैंसे पर अपना 'रिसा' (वक्षस्थल ढकने का वस्त्र) डाल दीजिए तो यह भैंसा शांत हो जाएगा और फिर इसकी बलि दिलवा दीजिए । रानी ने ऐसा ही किया । वह चौदह देवताओं को अपने महल में ले गई । आज भी ये चौदह देवता आषाढ़ मास की शुक्ल पक्ष की अष्टमी को पूजे जाते हैं और केवल राज परिवार में ही नहीं बल्कि ये सभी जनजातियों के कुल देवता माने जाते हैं । भैंसे की बलि देने की प्रथा भी इसीलिए प्रचलित है ।

'चौदह देवता' की तरह बुरासा देवता, माइलूमा व खुलूमा, तुईमा देवी और गरिया देवता से संबंधित अनेक कथाएँ कॉकबरक भाषा में उपलबध हैं ।

२. **ऐतिहासिक कथाएँ** : कॉकबरक की 'कांचनमाला' नामक कथा ऐतिहासक है । इस लोककथा में राजाओं के समय प्रजा पर जो अत्याचार किये जाते थे, उसका वर्णन है । कांचनमाला का जेठ एक दुश्चरित्र व्यक्ति है जिसने अपने छोटे भाई के पत्नी पर कुदृष्टि डाली । उसने भाई को राजा की सेना में भेज दिया और वह उसकी पत्नी के पास लौट आया । इसमें कांचनमाला के पति की मृत्यु का सांकेतिक संदेश है और मनुष्य की कामुक प्रवृत्ति को दिखाया गया है ।

'काकताशदी' लोककथा भी ऐतिहासिक है जिसमें राजाओं के समय प्रचलित अत्याचारों का उल्लेख हुआ है । राजाओं के सैनिक राजाओं की कामुक प्रवृत्ति के कारण उनके लिए सुन्दर लड़कियाँ ढूँढ कर लाया करते थे । इस बात का पता इस लोककथा से चलता है ।

चौदहदेवता, राजा गोविन्द मानिक्य आदि लोककथाएँ भी ऐतिहासिक है ।

३. **अलौकिक कथाएँ** - 'तालनि बोसाला' : इस कथा में अनाथ कूफू के गर्भ से एक के रूप में चाँद कुमार ने जन्म लिया । वह मेंढक से इन्सान बन गया और उसने राजकुमारी से विवाह किया । इस कथा में अलौकिकता कूफू का चन्द्रमा के द्वारा गर्भवती और उसके गर्भ से मेंढक का जन्म होना आदि है । इसी तरह 'सिरंगति' नामक कथा में दो अनाथ बच्चे अपनी दादी के साथ

रहते थे । उनको यमदूत की दया से 'सिरंगति' जादूई अंगूठी मिल जाती है । उस अंगूठी से दोनों अनेक चमत्कारी कार्य करते हैं और अंत में एक भाई का विवाह राजकुमारी से हो जाता है । 'मोखरा चामुरोई' में बन्दर ईश्वर का वरदान प्राप्त कर इन्सान बन जाता है ।

४. नीति-कथाएँ : 'काइसा बरक' नामक एक व्यक्ति एक गाँव में रहता था । जहाँ लोग उसको सरदार कहते थे । वह न्यायकर्ता के रूप में प्रसिद्ध था । वह जब कभी न्याय करता तो अन्त में यह कहता कि यदि मैंने अन्याय किया हो तो मेरा इकलौता बेटा मर जाये । सरदार का सत्रह साल का बेटा अपने पिता की इस शपथ से नाराज होकर घर छोड़कर चला गया । वह एक गाँव में पहुँचा वहाँ उसने एक घर में शरण ली । रात को उसे नींद नहीं आई । उसने सुना कि कोई धीरे-धीरे दरवाजा खट-खटा रहा है । घर की महिला ने उठकर दरवाजा खोला और एक व्यक्ति भीतर आ गया । महिला और आने वाले व्यक्ति ने सोते हुए व्यक्ति का कत्ल कर दिया । वह व्यक्ति तो चला गया मगर महिला जोर-जोर से रोने लगी कि मेरे पति को कोई कत्ल करके चला गया है । उसके चिल्लाने पर वह लड़का भाग निकला ।

दूसरे दिन उसके पिता को न्याय करने के लिए बुलाया गया । उसने सारे गाँव के लोगों को आने के लिए कहा । अब उसके बेटे ने सोचा देखता हूँ मेरे पिता कैसे सच्चा न्याय करते हैं । उसके पिता ने कहा गाँव वालों अभी एक आदमी बाकी है, उसको भी बुलाओ । अन्त में हत्यारे को बुलाया गया और न्यायकर्ता ने कहा कत्ल इसी युवक ने किया । देखो इसकी गर्दन पर खून लगा हुआ है। युवक ने घबरा कर अपने गमछे से गर्दन पौंछी । न्यायकर्ता ने कहा कि यह युवक और मरने वाले की पत्नी दोनों कातिल हैं । यह न्याय करने के बाद उसने फिर वही शपथ ली । इसके बाद सरदार के बेटा ने पिता से माफी मांगी । यह न्यायकर्ता की अद्‌भुत कहानी है । जिसकी तुलना चोर की दाढ़ी में तिनका से की जा सकती है ।

५. हास्य कथाएँ : 'नाथंग नक काइसा' (बहरा परिवार) -- यह लोककथा हास्य पूर्ण है। एक लड़की जो बहरी है । वह नदी के घाट पर नहा रही थी । उसी समय राजा के सैनिक वहाँ आ जाते हैं और उससे सस्ता पूछते हैं । उत्तर में वह बताती है कि यह घाट मेरा है जहाँ मैं रोज नहाती हूँ । राजा के सैनिकों ने दुबारा रास्ता पूछा तो उसने कहा कि पड़ोस का घाट मेरी माँ का है । सैनिक चिढ़ कर चले गये । उसके बाद लड़की बहुत प्रसन्नता पूर्वक घर गई और उसने माँ से कहा कि मैं बहुत भाग्यशाली हूँ जिससे राजा के सैनिकों ने बात की है। माँ भी बहरी थी । उसने समझा इसको शादी किए अभी एक साल ही हुआ है और यह अलग होने की बात कह रही है । इस पर वह गुस्से में अपने बधिर पति के पास गयी जो उस समय एक टोकरी बना रहा था। उसने समझा कि पत्नी उस पर अकेले सारी मछली खाने का आरोप लगा रही है। इससे क्रोधित होकर उसने टोकरी को तोड़ दिया और पत्नी को पीटने लगा। शोर सुनकर पड़ोसी दौड़ कर आये। उन्होंने सारी बात जान कर उनको बोलने के बजाय संकेत भाषा में बात करने की सलाह दी ।

६. पशु-पक्षी संबंधी कथाएँ : पशु-पक्षियों से संबंधित अनेक कथाएँ यथा, तॉकपिपि, मायुंग कुफूर, तयुंग, तॉकपिक आदि कॉकबरक भाषा में उपलब्ध हैं । जो मनोरंजन के साथ-साथ सीख भी देती है । 'मायुंग तेई माँसा दुई' में हाथी के घमण्ड का वर्णन है । एक हाथी नदी पर पानी पीने गया । उसने देखा कि पानी बहुत गन्दा है । अभी-अभी कोई नहाकर गया होगा । उसको

बहुत प्यास लगी हुई थी इसलिए उसने सोचा जिसने भी पानी गन्दा किया है उसको मैं सजा दूँगा। उसने देखा कि एक साही नदी में नहाकर अपने बिल में घुस रहा है । हाथी ने उसको ठीक से नहीं देखा और वह नहीं समझ पाया कि यह कौन सा जानवर है । परन्तु इस से ही वह चिल्लाया -- तुमने मेरा पानी गन्दा किया है ? साही ने पूरा शरीर बिल में छिपाने के बाद केवल मुँह बाहर निकाला और हाथी को डाँटते हुए कहा- तुम मुझ पर इल्जाम लगा रहे हो । मुझे इस तरह आँख मत दिखाओ, मैं इस जंगल का राजा हूँ । तुम इसी समय यहाँ से चले जाओ ।' हाथी क्रोधित हो उठा और गरज कर कहा तुम बाहर आओ ।' साही समझ गया कि यह मुझे देखना चाहता है । वह बाहर नहीं निकला । उसने अपनी पूँछ से एक नुकीला काँटा हाथी की तरफ फेंका और कहा कि ये मेरे शरीर का एक रोम है । हाथी ने देखा कि यह एक रोम लोहे से भी कठोर व नुकीला है । ऐसा पशु तो मैंने पहले कभी नहीं देखा, यह सोचते हुए वह वहाँ से खिसक गया । साही खूब जोर से हँसने लगा और कहने लगा कि हाथी शरीर में मुझ से बड़ा है परन्तु वह बुद्धि में मेरे बराबर नहीं है ।

७. सामाजिक कथाएँ : इसके अन्तर्गत कॉकबरक भाषा की अनेक लोक कथाएँ से पेंगति बाई माइरूँगति, नवाई, कोसोरांग बोरोइ, बुखुकनोई, कियिंगरकनि कथमा आदि आती हैं । जो सामाजिक स्वरूप को स्पष्ट करने के साथ 'बरक' वासियों के आर्थिक स्वरूप को भी स्पष्ट करती है । एक उदाहरण प्रस्तुत है -- 'बुखुकनोई' कहानी में छोटी बहन धनी है, जबकि बड़ी बहन निर्धन है । गरीब बहन एक दिन अपनी छोटी बहन के घर सहायतार्थ जाती है । छोटी बहन उसके साथ दुर्व्यवहार करती है और उसको कहती है कि तू घर के पिछले दरवाजे से निकल जाओ । इस कहानी में देवता की कृपा से बड़ी बहन की सब्जी सोना बन जाती है । वह भी धनी हो जाती है। बड़ी बहन के मन में प्रतिशोध की भावना जागती है । वह बहुत सारे सोने के आभूषण पहन कर छोटी बहन के घर जाती है तो दुर्व्यवहार करने वाली छोटी बहन उसका बहुत सम्मान करती है । किन्तु बड़ी बहन बिना खाये-पिये घर के पिछले दरवाजे से जाती है और उसको यह भी कहती है कि तुमने मेरा नहीं सोने का सम्मान किया है । इस कहानी ने आर्थिक स्थितियों के कारण मनुष्य के व्यवहार में क्या परिवर्तन आता है, का मनोवैज्ञानिक वर्णन है ।

कॉकबरक लोककथाओं की विशेषताएँ :

१.कॉकबरक एक जनजातीय भाषा है, जिसका लिखित व प्रकाशित साहित्य नहीं के बराबंर है । अतः कॉकबरक भाषा-भाषियों की लोककथाओं का आधार उनकी स्थानीय धार्मिक मान्यताएँ हैं, जिनका आधार लोक विश्वास है ।

२.कॉकबरक की लोककथाओं में व्यक्तिवादी लोककथाएँ भी उपलब्ध होती हैं । उदाहरण के लिए नदी मौसी, चेथुवांग, काइसाबरक आदि कहानियों में व्यक्ति विशेष के चरित्र को उभारा गया है ।

३.कॉकबरक की लोककथाओं में मानव समाज के साथ पशु-पक्षी समाज का भी वर्णन मिलता है । समाज परक कथाओं में भी व्यक्ति इकाई के रूप में विद्यमान रहता है किन्तु पशु-पक्षी संबंधी कथाओं में कभी-कभी मनुष्य पात्र नहीं होते । उदाहरण तॉकपिपि, मांसादुई तेई मायुंग आदि कथा ।

४.कॉकबरक भाषी समाज में कई प्रकार के नियम प्रचलित हैं और इसकी लोककथाओं में रीति-नीति की कथाएँ मिलती है । समाज के नियमों का पालन करने के लिए ही कुछ कथाओं का प्रचलन है जिससे शिक्षा ग्रहण करके समाज के नियम-कानून का पालन किया जाता है । उदाहरण के लिए चेथुवांग नामक कथा में समाज में बहन-भाई के विवाह का निषेध दिखाया गया है । जिससे कोई भाई-बहन इस प्रकार की चेष्टा न करें । चेथुवांग लोककथा कॉकबरक भाषियों के जीवन में मूल्यों और आदर्शों की स्थापना का कार्य करती है ।

५.कॉकबरक की लोककथाओं के माध्यम से त्रिपुरा के आदिवासियों की आर्थिक स्थिति झूम खेती पर निर्भर है, इस बात का पता चलता है ।

६.कॉकबरक भाषा में पौराणिक लोककथाएँ उपलब्ध नहीं होती है । स्थानीय विश्वासों पर आधारित देवी-देवताओं और धार्मिक कथाएँ ही मिलती है ।

७. डॉ. अरुधंती राय ने 'त्रिपुरा उपजाति लोककथा समाज और रूपतत्व पुस्तक में लिखा है--''त्रिपुरा उपजाति लोककथा में उपजाति समाज का जातिगत ऐतिहासिक उपादान उपलब्ध हैं।'' जैसे कॉकताशादी, कांचनमाला, चौदह देवता आदि लोककथाएँ ऐतिहासिक हैं।

८. इन लोककथाओं में त्रिपुरा प्रदेश के प्राकृतिक सौन्दर्य का सुन्दर वर्णन मिलता है । यथा, खेलांग बुबार, खुमपोई, राइमा-साइमा नदी, तुईमाँ (वर्तमान नाम गोमती), साम्फारी पुष्प, पशु-पक्षियों, झूम खेती के प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है ।

९.कॉकबरक लोककथाओं की भाषा अत्यंत सरल व रोचक हैं । इन कथाओं के माध्यम से बच्चों को विभिन्न प्रकार की नीति संबंधी बाते भी सिखायी जाती हैं इसलिए लोककथाकार भाषा की सरलता और सहजता का पूरा ध्यान रखता है ।

१०.कॉकबरक लोककथाओं में अश्लील भाषा व प्रसंगों का अभाव देखने को मिलता है।

११.कुछ कॉकबरक लोककथाओं को यथा -- खेलांग बुबार, खुमपोई, चेथुवांग, कांचनमाला, नखपिपिनि, हामजाकमा आदि को छोड़कर प्रायः सभी कथाओं का अंत संयोग में ही होता है ।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि कॉकबरक लोककथाओं में जहाँ प्राचीन काल के गौरवशाली चरित्रों के साहसिक कार्यों का वर्णन किया जाता था, वहीं पशु-पक्षियों, वृक्षों, पर्वतों आदि के बहुरंगी चित्र भी उतारे जाते थे । युद्ध, प्रेम, शिकार, तीरंदाजी और धार्मिक उत्सवों से संबंधित कथाएँ भी मौखिक लोक परंपरा में मिलती है । शिशु जन्म, विवाह, मृत्यु आदि सामाजिक समारोहों में लोग रात भर जागकर लोककथाओं को सुनते-सुनाते थे । इन कथाओं को सुनकर कॉकबरक भाषी कठिन श्रम से भरे कष्ट- साध्य जीवन को भूलने की कोशिश करते हैं । इन कथाओं में लोककथाकार की आत्माभिव्यंजना के साथ 'बरक' लोक-जीवन का सौन्दर्य मुखरित होता था ।

संदर्भ-सूची :

१. त्रिपुरा प्रभांशु, त्रिपुरा लोक कहानी, अक्षर पब्लिकेशन जी. बी. रो, अगरतला त्रिपुरा, प्रकाशन वर्ष २००६

२. त्यागी डी. के., ट्राखेल फोकटेल्स ऑफ त्रिपुरा, ट्राइबेल कल्चर रिसर्च इंस्टिट्यूट एण्ड म्यूजियम, त्रिपुरा सरकार प्रकाशन वर्ष १९९७ (प्र.प्र.)

३. दास कृष्ण, आदिवासी त्रिपुरार लोककथा लोकगीति प्रवाद प्रवचन ओ धाँ धाँ, उपजाति गवेषणा केन्द्र, अगरतला त्रिपुरा, प्रथम प्रकाशन २००० ई.

४. चौधुरी कुमुदकुन्दु, कॉकबरक भाषा ओ साहित्य, अक्षर पब्लिकेशन कृष्ण नगर अगरतला, प्रथम प्रकाशन १९९९ ई.

५. सेन कालीप्रसन्न, श्री राजामाला (द्वितीय लहर) उपजाति संस्कृति गवेषणा त्रिपुरा सरकार अगरतला, द्वितीय संस्करण २००३ ई.

६. चौधुरी कुमुदकुन्दु, करेंग कथमा-संग्रह ओ अनुवाद, अक्षर पब्लिकेशन अगरतला, प्रकाशन वर्ष २००३ ई.

७. दास निर्मल, प्रसंग लोकसंस्कृति ओ त्रिपुरा, अक्षर पब्लिकेशन अगरतला, प्रकाशन वर्ष २००६ ई.

८. चक्रवर्ती शांतिमय, त्रिपुरार रूपकथा, त्रिपुरा ट्राइबेल रिसर्च इंस्टिट्यूट अगरतला, प्रथम संस्करण ।